:
🌒 कुछ ज्योतिषिक योग🌒

आज हम कुछ ज्योतिष्क योगों के बारेमें विचार करेंगे ।।

(1) 🌔 लक्ष्मी योग- ये योग चंद्र+ मंगल की युति से बनता है । कुंडली के किसी भी भाव में चंद्र-मंगल का योग बन रहा है तो जीवन में धन की कमी नहीं होती है। मान-सम्मान मिलता है। सामजिक प्रतिष्ठा बढ़ती है।

(2) 🌔 गजकेसरी योग- बहोत चर्चित इस योग के बारेमें सभी ज्योतिष में ज्ञान रखनेवाले पाठक जानते ही हैं । जिसकी कुंडली में शुभ गजकेसरी योग होता है, वह बुद्धिमान होने के साथ ही प्रतिभाशाली भी होता है। इनका व्यक्तित्व गंभीर व प्रभावशाली भी होता है। समाज में श्रेष्ठ स्थान प्राप्त करते है। शुभ योग के लिए आवश्यक है कि गुरु व चंद्र दोनों ही नीच के नहीं होने चाहिए। साथ ही, शनि या राहु जैसे पाप ग्रहों से प्रभावित नहीं होना चाहिए।

(3) 🌔 सिंघासन योग- जन्म कुन्डलीमें यदि सभी ग्रह दूसरे, तीसरे, छठे, आठवे और बारहवे घर में बैठ जाए तो कुंडली में सिंघासन योग बनता है। इसके प्रभाव से व्यक्ति शासन अधिकारी बनता है और नाम प्राप्त करता है।

(4) 🌔 श्रीनाथ योग- अगर लग्नेश और सप्तमेश कर्म यानी की दशम भावमें में स्थित हो और दशमेश यदि भाग्यस्थान में भाग्येश के साथ हो तो श्रीनाथ योग का निर्माण होता है। इसके प्रभाव से जातक को धन, नाम, यश , वैभव आदि की प्राप्ति होती है। ये बहोत ही शुभ योग है ।।
🌒 शरद कोटक 🌒

🌒 त्रिशमांश कुंडली विचार भाग-2🌒

हमने त्रिशांश कुंडली के बारेमें कुछ विचार अगली पोस्ट में किया था । अब आगे चलते हैं ।

🌑 (1) त्रिशांश कुण्डलीसे हम अनिष्ट का विचार करते हैं । त्रिश्मंश कुंडली में अनिष्ट घटनाओ का विचार करते समय यह अवश्य ध्यान रखें कि यह घटनाए तभी घटित होंगी जब महादशा , योगीनी , दशा व गोचर में इन ग्रहों में घटनाओ का संचरण होगा या संकेत मिलेगा । एक सर्व सामान्य सिद्धांत पाराशरी में स्थापित किया गया है कि ग्रह अपने अच्छे या बुरे फल अपनी दशा अंतर्दशा में ही प्रदान करेगा ।

🌑 (2-A) त्रिश्मंश कुंडली का लग्नेश यदि केंद्र या त्रिकोण में स्थित हो तो जातक के जीवन में शुभ घटनाए ज्यादा व अशुभ घटनाए कम होती है ।

🌑 (2-B)परन्तु यदि त्रिक भाव 6 , 8 , 12 वे भाव में लग्नेश बैठ जाए या पाप ग्रहों से युत या द्रष्ट हो तो जातक के जीवन अंत यानी मृत्यु ग्रह अनुकूल वस्तु विशेष के संपर्क में आने से होता है ।
(यहा ग्रह अनुकूल वस्तु का प्रयोग ग्रहकी कारकता से संबंधित समजे ।)

🌑 (3) त्रिश्मांश कुंडली का लग्नेश सूर्य हो तो ऊँचे स्थान से गिरकर म्रत्यु को प्राप्त होता है ।

🌑 (4) त्रिश्मांश कुंडली का लग्नेश यदि चन्द्रमा हो तो जल में डूबकर या जलोधर सम्बंधित बीमारी से म्रत्यु होती है या चंद्र संबंधित रोग मृत्यु का कारण बनते हैं ।

🌑 (5) त्रिश्मांश कुंडली का लग्नेश यदि मंगल हो तो शस्त्र , आयुध से या शल्य क्रिया (Operation) मृत्यु का कारण बनता है ।

🌑 (6) त्रिश्मांश कुंडली का लग्नेश यदि शनि हो तो वाहन से मृत्यु का विचार किया जाता है ।

🌑 (7) त्रिश्मांश कुंडली का लग्नेश यदि गुरु हो तो वायु सम्बन्धी रोग जैसे पथरी , Stone , किडनी , गैस और चर्बी cholestral आदि से सम्बंधित रोग से मृत्यु का विचार किया जाता है ।

🌑 (8) त्रिश्मांश कुंडली का लग्नेश यदि शुक्र हो तो विलाशिनता , अय्याशी , गुप्त रोग (Vulnerable disease) से मृत्यु का विचार किया जाता है ।

🌑 (9) त्रिश्मांश कुंडली का लग्नेश यदि बुध हो तो व्यापर में घाटे से या व्यापारिक धोखा मृत्युका कारण बनता है ।
🖤 ये बाद बहोत महत्वपूर्ण है और ध्यान रखने जैसी है🖤

🌑 (10) त्रिश्मांश कुंडली का लग्नेश यदि राहु / केतु हो तो विष से या विष युक्त जानवरों के काटने से और आत्म हत्या के द्वारा मृत्यु का विचार किया जाता है । कभी कभी आकस्मिक मृत्यु या हत्या की भी संभावना होती है ।

🌑त्रिश्मांश कुंडली के षष्टेश के अनुसार जातक को रोग उत्पन्न होते है🌑
~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

🌑 (1) त्रिश्मांश कुंडली में षष्टेश यदि सूर्य है तो तेज़ ज्वर , नेत्र रोग ,आधा शिशि (Migrain) पीलिया , ह्रदय रोग आदि की संभावना होती है ।

🌑 (2) त्रिश्मांश कुंडली में षष्टेश यदि चन्द्रमा है तो कफ , शीत , cough and cold , Influenza ,मानसिक रोग और यूरिन सम्बन्धी रोग। की संभावना होती है

🌑 (3) त्रिश्मांश कुंडली में षष्टेश यदि मंगल है तो रक्त विकार ,रक्त चाप -(BP) और फोड़े फुंसी की संभावना

🌑 (4) त्रिश्मांश कुंडली में षष्टेश यदि बुध है तो त्वचा सम्बन्धी रोग , छोटी आंत के रोग (Small Instentine) , श्वास रोग , और बैक बोन से सम्बंधित रोग होते है ।
~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

🌑 (5) त्रिश्मांश कुंडली में षष्टेश यदि गुरु हो तो आलस्य , सन्निपात , कर्ण दोष , लीवर आदि के रोग

🌑 (6) त्रिश्मांश कुंडली में षष्टेश यदि शुक्र हो तो गुप्तांग के रोग , प्रजनन सम्बन्धी रोग , blood Sugar आदि रोग की संभावना होती है । कभी कभी जातक को कलंक भी लगता है ।

🌑 (7) त्रिश्मांश कुंडली में षष्टेश यदि शनि हो तो वात विकार ,स्थि भंग (Fracture) , लक्वा (Paralysis) , शत्रु से पीड़ा , विवाद , और जेल यात्रा की संभावना ।

🌑 (8-A) त्रिश्मांश कुंडली में षष्टेश यदि राहु केतु हो तो डिप्रेशन की संभावना होती है । मानसिक रोग होते हैं ।

🌑 (8-B) त्रिशमांश कुन्डलीमें राहु केतु यदि लग्न में हो तो कैंसर से म्रत्यु का विचार किया जाता है ।

🖤मैं आशा करता हु कि ज्योतिषविदों को भी ये पोस्ट काम आएगी ।।🖤

🌑🔯 SK Astro🔯🌑

🍀 दशाफल के कुछ नियम 🍀

👉कोई भी ग्रह अपनी दशा या अंतर्दशा में ही सामान्य रूप से अपना फल प्रदान करता है ।

👉इस मे कुछ आचार्यों ने अप्वादरूप नियम भी दिए हैं जैसे कि शनि की दशा में शुक्र और शुक्र की दशा में शनि का फल । किंतु हम बजाय गहन विचार किये ,सामान्य और सर्व सम्मत नियमों का ही विचार करेंगे ।

👉मुख्य रूपसे दशा फल कथन का आधार होती हैं | प्रत्येक ग्रह अपने स्वभाव और स्थिति के अनुसार दशा आने पर किस प्रकार से फल प्रदान करता हैं ,उस के बारेमें कुछ नियम |

🍀 1 परम ऊंच-इस अवस्था का ग्रह अपनी दशा मे श्रेष्ठ फल देता हैं |

🍀 2 ऊंच –ऊंच राशि का ग्रह अपनी दशा मे प्रत्येक प्रकार का सुख प्रदान करता हैं |

🍀 3 आरोही-अपनी ऊंच राशि से एक राशि पहले का ग्रह अपनी दशा आने पर धन्य धान्य की वृद्दि एवं आर्थिक दृस्ती से संपन्नता देता हैं |

🍀 4 अवरोही-अपनी ऊंच राशि से अगली राशि पर स्थित ग्रह अपनी दशा मे रोग,परेशानी,मानसिक व्यथा व धन हानी प्रदान करता हैं |

🍀 5 नीच- नीच राशि का ग्रह अपनी दशा मे मान व धन हानी करवाता हैं |

🍀 6 परम नीच –इस अवस्था का ग्रह अपनी दशा मे ग्रह क्लेश,परिवार से अलगाव,दिवालियापन,चोरी व अग्नि का भय प्रदान करता हैं |

🍀 7 मूल त्रिकोण –इसमे स्थित ग्रह अपनी दशा आने पर भाग्यवर्धक एवं धन लाभ कराने वाला होता हैं |

🍀 8 स्वग्रही-इसमे स्थित ग्रह अपनी दशा आने पर विद्या प्राप्ति,यश बढ़ोतरी व पदोन्नति करवाता हैं |

🍀 9 अति मित्र-अति मित्र ग्रह स्थित ग्रह अपनी दशा मे वाहन व स्त्री सुख देने वाला तथा विभिन्न मनोरथ पूर्ण करवाने वाला होता हैं |

🍀 10 मित्र ग्रह-इसका ग्रह अपनी दशा मे सुख,आरोग्य व सम्मान प्रदान करने वाला होता हैं |

🍀 11 सम ग्रह- इसमे बैठा ग्रह अपनी दशा मे सामान्य फल प्रदान करने वाला व विशेष भ्रमण करवाने वाला होता हैं |

🍀 12 शत्रु ग्रह-इसमे बैठे ग्रह की दशा मे स्त्री से झगडे के कारण मानसिक अशांति प्रदान करता हैं |

🍀 13 अति शत्रु- इसमे बैठा ग्रह अपनी दशा मे मुकद्दमेबाजी,व्यापार मे हानी,व बंटवारा करवाने वाला होता हैं |

🍀 14 ऊंच ग्रह संग ग्रह –यह ग्रह अपनी दशा मे तीर्थ यात्रा वा भूमि लाभ करवाने वाला होता हैं |

🍀15 पाप ग्रह संग ग्रह- यह ग्रह अपनी दशा मे घर मे मरण,धन हानी प्रदान करता हैं |

🍀16 शुभ ग्रह के साथ ग्रह –यह ग्रह अपनी दशा आने पर धन धन्य की वृद्धि,धनोपार्जन व स्वजन प्रेम आदि का लाभ देता हैं |

🍀 17 शुभ द्रस्ट ग्रह-यह ग्रह अपनी दशा मे विधा लाभ,परीक्षा मे सफलता,तथा ख्याति प्राप्त करवाता हैं |

🍀 18 अशुभ द्रस्ट-इस ग्रह की दशा मे संतान बाधा,अग्निभय,तबादला तथा माता पिता मे से एक की मृत्यु होती हैं |

इनके अलावा कुंडली मे दशाओ का फलादेश करते समय कई अन्य बातों का भी ध्यान रखना चाहिए जिनमे कुछ बाते इस प्रकार हैं |

(1) 👉 लग्न से 3,6,10,व 11वे भाव मे स्थित ग्रह की दशा उन्नतिकारक व सुखवर्धक होती हैं |

(2) 👉 दशानाथ यदि लग्नेश,नवांशेश,होरेश,द्वादशेश व द्रेष्कानेश हो तो उसकी दशा जीवन मे मोड या बदलाव लाने मे सक्षम होती हैं |

(3) 👉 मांदी जिस स्थान मे हो उस राशि के स्वामी की दशा रोग प्रदान करने वाली होती हैं |

(4) 👉 अस्त/वक्री/युद्ध मे सम्मिलित ग्रह की दशा अशुभ फल प्रदान करती हैं

(5) 👉 संधिगत ग्रह,6,8,12 वे भाव के स्वामी की दशा अनिश्चय प्रधान होने से पतन की ओर ले जाती हैं |

(6) 👉 नीच और शत्रु ग्रह की दशा मे परदेश मे निवास,शत्रुओ व व्यापार से हानी तथा मुकदमे मे हार होती हैं परंतु नीच कार्यो से लाभ मिलता हैं |

(7) 👉 राहू व केतू यदि कुंडली मे 2,3,6 या 11 वे भावो मे हो ना तो इनकी दशा मे अशुभता ही मिलती हैं |

🍀

💥ग्रहों के उपाय💥

संयुक्त ग्रहों के उपाय-

यदि किसी जातक की जन्मकुंडली में शुक्र और सूर्य की युति किसी भी भाव में हो तो जातक को दुर्गा पूजन लाभदायक होगा ।

सूर्य.शनि की युति कुण्डली के किसी भी भाव में होने पर जातक बादाम,नारियल बहते पानी में बहाए।

सूर्य.राहू की युति होने पर जातक जौ को दूध या गौ मूत्र से धोकर बहते पानी में बहायें।

यदि जातक की कुण्डली में बुध अशुभ या नीच राशि का हो तब जातक मंगल एवं राहू के उपाय करके बुध के दुश्प्रभाव को दूर करें।

सूर्य.केतु की युति होने पर सूर्य ग्रहण के समय तिल,नींबू,पका केला बहते पानी जैसे नदी में बहायें।

गौ मूत्र घर में छिड़कने से केतु.शुक्र एवं बुध का अशुभ प्रभाव कम हो जाता है ।

जातक की जन्म कुण्डली में चंद्र.शुक्र की युति हो तो चांदी की ठोस गोली हमेशा अपने जेब में रखें ।

चंद्र.शनि की युति होने पर शनि एवं केतु के उपाय लाभकारी होते है। चंद्रग्रहण के समय शनि की वस्तुएं बहते पानी में बहाने से लाभ होता है।

शनि.चंद्र के अशुभ प्रभाव को दूर करने के लिए सूर्य का उपाय करें ।

कुण्डली में मंगल.राहू की युति होने पर मिट्टी के बर्तन में जौ भरकर बहते पानी जैसे नदी में बहाये तथा मंगल का उपाय करें ।

बुध.शनि की युति में जातक को शराब मांस का सेवन नहीं करना चाहिए।

बुध.राहू की युति हो तो जातक को कच्ची मिट्टी की सौ गोलियां बनाकर एक गोली प्रतिदिन धर्म स्थल में पहुंचानी चाहिएं।

गुरू.बुध की युति में खांड से भरा मिट्टी का बर्तन भूमि में दबाना चाहिए।

चंद्र.राहु की युति हो, तब चंद्रग्रहण पर जौं,कोयला, सरसों आदि राहु की वस्तुएं बहते पानी में बहायें और मंगल,गुरू का उपाय करें।

चंद्र.केतु की युति होने पर जातक बुध एवं केतु की वस्तुओं का दान करें । तीन केले प्रतिदिन ४८ दिन तक मंदिर में दान करें।

मंगल.बुध की अशुभ युति में जातक मंगल का उपाय करें ।

*मंगल. शनि की युति होने पर मंगल या शनि का उपाय करें साथ ही चंद्र का उपाय करें। *

शुक्र.राहु की युति होने पर दूध एवं हरे नारियल का दान करें ।

यदि कुण्डली में सूर्य.चंद्र.राहु की युति हो तो जातक दुर्गा उपासना करें एवं बुध का उपाय करें ।

*इसी तरह सूर्य.चंद्र.केतु की युति होने पर भी दुर्गा उपासना करें एवं बुध का उपाय करें । *

कुण्डली में सूर्य.बुध.शुक्र की युति होने पर जातक कान में स्वर्ण धारण करें तथा काला,सफेद कुत्ता पाले । शुध्द चांदी का छल्ला भी धारण कर सकते है।

गुरू. शनि की युति में, शराब,मांस,मदिरा का उपयोग न करे। शिव उपासना करें। चंद्र का उपाय करें ।

गुरू.राहु की युति में अशुभता से बचने के लिए सोना धारण करें। चितकबरें कुत्ते की सेवा करें। जौं को दूध से धोकर लगातार ४३ दिन तक बहते पानी में बहायें।

शुक्र. शनि की युति हो तो तांबे का पैसा बहते पानी में बहायें और दशम भाव में जो भी ग्रह बैठा हो उसका उपाय करें।

सूर्य.बुध.राहु की युति हो तो जातक चंद्रमा का उपाय करें।

यदि सूर्य.बुध की युति हो तो गायत्री पाठ करें । हरे तोते पाले ।

चंद्र.मंगल और शनि की युति में मंगल का उपाय करें।

चंद्र.मंगल.राहु की युति हो तो दूध में मीठा हलुआ बनाकर स्वयं खाये तथा दुसरों को खिलाएं।

गुरू.शनि.राहु की युति हो तो शनि की वस्तुएं भूमि में दबायें।

यदि शनि.राहु.शुक्र की युति हो तो जातक रोटी के तीन टुकड़े करके एक गाय को एक कुत्ता और एक कौएं को खिलाएं।

गुरू.शनि.बुध की युति हो तो बुध की वस्तुएं जैसे हरा मूंग कुएं में गिराये तथा बुध को उच्च करें।

गुरू.मंगल.बुध की युति हो तो जातक सोना धारण करे।

शुक्र.शनि.बुध की युति हो,तो काली गाय या काला कुत्ते को रोटी दें